भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, अंक-7-8	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
गुरुवार, 25 अगस्त' 83	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

वैशाख शुक्ला पूर्णिमा के दिन महाराज मंदिर देखने आये और देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। भव्य मंडप में महाराज गद्दी-तकिये पर विराजमान हुए और कहा-''इतना सुंदर मंदिर आप सबने बहुत कम समय में निर्मित किया इसके लिये आप सब धन्यवाद के पात्र हो। और आज इस मंगल प्रंसग के उपलक्ष्य में गुणातीतानंदस्वामी का सत्कार हम करेगें।'' यूं कहकर जितने हार महाराज के गले में थे वे सारे हार स्वामी को पहनाये और अपने सामने स्वामी को प्रेमपूर्वक बिठाया। बाद में स्वामी की महिमा को महाराज नें स्वयं सबको समझायाः

''गुणातातानंदस्वामी स्वयम् 'अक्षर' हैं। स्वामीजी को हम स्वयं अक्षरधाम से अपने साथ लाये हैं। हमारा साक्षात् अक्षरधाम इस साधु के रुप में आज यहाँ मौजूद है और आप सबको सेवा समागम का सुख मिले इसके लिए आजीवन यहीं रहेंगे। इनके दर्शन, इनकी सेवा और इनके समागम का लाभ प्राप्त करोगे तो आप कृतार्थ हो जाओगे।''

महाराज के आशीर्वाद :

बाद में यज्ञ का प्रारंभ महाराज के वरद् हस्त से हुआ और कृष्ण तृतीया के दिन वेदोक्त विधि से मूर्तियों की पूजा की गई और संतों ने मूर्तियों को अपने-अपने स्थानों में प्रतिष्ठित की।

महाराज तो अन्नपूर्णा समान थे। इन्होंने स्वयं संतों को परोसा और आशीर्वाद भी दियेः

''संतो! ये लड्डू चढ़ाकर मैं आपको परोस रहा हूं और आप उत्साह से भोजन कर रहे हो अतः आप निश्चित मानना कि मंदिरों के शिखर चढ़ गये।''

इस प्रकार मूर्ति पूजा और प्रतिष्ठा धूम-धाम से सम्पन्न हो गये। विरोधी और द्वेषी हाथ मलते रहे गये और महाराज का जय-जयकार हुआ! उस दिन की शाम की सभा में सद् ब्रह्मानन्दस्वामी ने अपनी उच्चकोटि की कविता का रसपान सबको करवाया। सभा में बड़े-बड़े विद्वान भी बैठे थे, वे पू. ब्रह्मानंदस्वामी की अपूर्व कवित्व शक्ति से आश्चर्य चकित रहे गये और सोचने लगे कि धन्य है स्वामिनारायण सम्प्रदाय! ऐसे-ऐसे रत्नों से तो सम्प्रदाय का गौरव है!

इस प्रसंग से सबको निश्चित प्रतीति हो गई कि श्रीजी महाराज साक्षात् भगवान है।

महाराज की आज्ञा :

इस सभा में महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी का अद्‌भुत गौरव करते हुए आगे कहाः

''परमहंसों, त्यागी, हरिभक्तों सबको हमारी आज्ञा है कि वर्ष में एक मास मूलअक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी का समागम करने के लिये यहाँ अवश्य आना है। यहाँ स्वामी का समागम करने के लिये जो कोई आयेगा उसको करोड़ों जन्मों की कसर मैं एक जन्म में ही नष्ट कर दूँगा।''

आगे सम्प्रदाय के वरिष्ठ साधु योगमूर्ति गोपालानन्दस्वामी को सम्बोधित करके कहाः

''आपको भी प्रतिवर्ष एक मास यहाँ आकर रहना है। यदि किसी वर्ष न आ सकें, तो दूसरे वर्ष दो मास तक यहाँ आकर रहना है।''

अक्षर-पुरुषोत्तम युगल उपासना का माहात्म्य

महाराज के मुख से कहे ये शब्द पढ़कर अब किसी के मन में तनिक भी शंका नहीं रहनी चाहिये कि गुणातीतानंदस्वामी स्वयं अक्षर थे और यह भी शंका नहीं रहनी चाहिये कि पूर्ण पुरुषोत्तम तक पहुँचने के लिए 'अक्षर' की आराधना अत्यंत आवश्यक है। 'अक्षर' और 'पुरुषोत्तम' मिलकर एक और अविभाज्य 'अक्षरपुरुषोत्तम' होता है। इस युगल उपासना से ही श्रेय है, गति है और मुक्ति है !

महाराज की आज्ञा का अनुपालनः

यह सत्य पू. प्रागजी भक्त समझे थे। इस 'अक्षर पुरुषोत्तम' की उपासना के लिये ही शास्त्रीजी महाराज ने गुजरात में अनेक भव्य मंदिरों को निर्मिति करवाया। इसके लिये ही योगीजी महाराज ने विदेश में भी मंदिर खड़े किये। आज प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. स्वामीजी की त्रिपुटी और प.पू. महंत स्वामी एवं प.पू. प्रमुख स्वामी इस परम्परा को अखंडित स्वरूप देने में कार्यरत हैं और उनके पीछे अनेक युवा नवशिक्षित संतों, युवकों-युवतियां कार्य-संलग्न है। 'अक्षर' जूनागढ़ के मंदिर के महन्त बनकर ही नहीं रह गये थे। इन्होंने संकल्प किया था कि संसार का हर पत्ता 'स्वामिनारायण' मंत्र का अखण्ड जाप करे। इस संकल्प की सिद्धि के लिये ब्रह्मस्वरूपों और संतों को निर्मल भाव से सभी सत्संगी साथ दे रहे हैं। महाराज ने जूनागढ़ मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के समय जो आज्ञा दी है इसका अनुपालन ही श्रेयस्कर है।

—क्रमशः

☆

पूरब से पश्चिम

समस्त सत्संग समाज को ज्ञात है कि गुणातीत समाज के प्राणपुरुष प्र.ब्र.स्व.प.पू. काकाजी आजकल विदेश के भक्तों को अक्षरधाम का सुख, शान्ति, आनन्द और सही अर्थ में जीवन जीने का प्रकाश देने विदेश की कल्याण यात्रा पर हैं। प.पू. काकाजी के अनन्य अंतेवासी एवं इस कल्याण यात्रा के सहभागी पू. महेन्द्रबापू ने विदेश के भक्तों की सेवा, भावना व प.पू. काकाजी की करुणा वात्सल्यता के बारे में हमें वहाँ से पत्र लिखा है। वे लिखते हैंः-

प.पू. काकाजी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है.....

यू.के. एवं यूरोप की धरती पर बेल्जियम, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड एवं फ्रांस के केन्द्रों में लगातार एक महीने तक धून्य, भजन, कथावार्ता

सहित लंबा प्रवास करके प.पू. काकाजी ने अपने संपर्क में आये हुए सेवकों के व्यवहार एवं जीवन में घुल मिलकर सच्चे दिव्य आनन्द की अनुभूति करवाई। प.पू. काकजी के प्रत्येक कार्य में एक निजी चमत्कार और व्यक्तिगत नवीनता रहती है। हम सभी विदेश के ऐश्वर्य, भोगविलास से अपरिचित नहीं है। और ऐसे में सबको पंचविषय की तुच्छता समझा कर भगवान व संत के वास्तविक स्वरूप की अनुभूति कराकर जीवन में संत की आवश्यकता क्यों....? यह सब विस्तार से बताकर सबके हृदय में शांति की ज्योति जलाई और वहां की प्रजा को भारतीय संस्कृति का परिचय देकर नई ही जागृति ले आये। नया देश-नया समाज—तथापि प.पू. काकाजी की उपस्थितिमात्र से ही नये-नये मुमुक्षु खींचे चले आते है। इटली में प.पू. काकाजी एक स्वीडिश परिवार में रहे और वहां करीब सौ से अधिक जिज्ञासुओं को प.पू. काकाजी ने खूब आत्मीयता से मार्गदर्शन दिया, जिससे सबको महसूस हुआ मानो सबको कोई missing link मिल गई हो.....हरेक को आत्मसंतुष्टि हुई। जर्मनी में प.पू. काकाजी दिल्ली के प.भ. चौधरी साहब के पुत्र बिट्टु के पास ठहरे...जहां पर भारतीय एवं अन्य सत्य-खोजकों ने प.पू. काकाजी की दिव्य मूर्ति के दर्शन व परावाणी का लाभ लिया। फ्रांस में युवक मण्डल की स्थापना की। एफिल टावर के नीचे सभा का आयोजन करके, हर एक की मुश्किलों समस्याओं का प्रभु आसान हल निकाल दे इस हेतु, धून्य-भजन करवाकर, प्रभु के करुणा सागर में झबोकर स्वामिनारायण महाप्रभु की विशिष्टता का ख्याल दिया और एक होकर-मिलजुल कर रहने का अनुरोध किया। प्रभु के सच्चे संत का प्रेम सूर्य के समान बिना किसी भेदभाव प्रकाश देता रहता है....और प.पू. काकाजी अपने सम्पर्क में आये हुए सभी को बिना कोई फर्क देखे अन्तर से महसूस करा देते हैं कि वह हमारे हैं और वे इनके हैं। इनके दर्शनमात्र से ही सभी शांति महसूस करते है...मन स्थिर हो जाता है। दिल ऐसी गवाही देता है कि अब कुछ ढूंढना शेष नहीं रहा.....मानवस्वरूप में साक्षात् प्रभु ! इससे अधिक भव्य प्राप्ति और क्या...?

पू. जशभाई साहेब और मंडल भी इन दिनों यू.एस.ए. की धर्मयात्रा सम्पन्न करके 3 जुलाई को यू.के. आ रहा था। प.पू. काकाजी के सान्निध्य में लन्दन मण्डल ने इनका खूब उल्लास से स्वागत करा। इंगलैण्ड में लैस्टर, न्यूकैसल, लक्बरों, नर्धम्पटन आदि केन्द्रों में प.पू. काकाजी ने कई नये-नये को स्वामिनारायण महाप्रभु की महिमा समझाकर प्रभु के मार्ग पर मोड़े, निष्ठा वाले भक्तों को संत प्रधान जीवन जीने की सूझ प्रदान करी और एकांतिकों को प्रभु में रहने में बाधारूप कसरें दिखाकर हृदय की गहराई से प्रार्थना करवाकर सही Guideline दे दी। अपने दैनिक कारोबार में खूब व्यस्त होने के बावजूद भी सद्भावना से जुड़े भक्तों ने अत्यधिक समय का प्रभु के इस कार्य में योगदान दिया। 1970 में प.पू. योगीबापा ने यहाँ आशीष दिये थे—'यहाँ 500 अंग्रेज सेवकों और 2000 अंग्रेज सत्संगी होंगे.... आनन्द के फव्वारे उड़ेगे—।' वह संकल्प आज साकार होता दिखाई देता है। 13 जुलाई को लंदन मण्डल द्वारा आयोजित विदाई समारोह में प.पू. काकाजी ने आशीष प्रदान करके सभी भक्तों से भावभीनी विदाई लेकर 14 जुलाई को U.S.A. शिकागो पहुँचे।

24 जुलाई को यू.एस.ए. सत्संग मण्डल के अध्यक्ष प.भ. दिनकरभाई, उपाध्यक्ष—प.भ. गोविन्दभाई सापोवाडिया एवं प.भ. सुरेशभाई शाह, प.भ. मनुभाई, प.भ. चन्द्रकान्तभाई, प.भ. मयूर, प.भ. दिव्यकान्तभाई एवं सत्संगी बहनों ने मिलजुल कर शिकागो में प.पू. काकाजी का

गुरुपूजन करके इनके आशीष से लाभान्वित होकर 'गुरुपूर्णिमा' महोत्सव खूब आनन्द उल्लास से मनाया। सोचने पर खूब आश्चर्य होता है कि न जान न पहचान....पर फिर भी प.पू. काकाजी के प्रति एक अजीब-सा आकर्षण ! गुरुपूर्णिमा के पवित्र अवसर पर नये आये हुए कई मुमुक्षुओं को भी प.पू. काकाजी के दर्शन सेवा, समागम व पुष्पांजलि का लाभ मिला। प.भ. दिनकरभाई एवं प.भ. महेन्द्रबापू ने सच्चे गुरु के लक्षण बताये और ऐसे अद्वितीय गुरु तो गुणातीत संत ही है– यूं समझा कर अपने उद्‌गार, प.पू. काकाजी के प्रति निष्ठा प्रकट की और सभी को अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा दृढ़ करने अनुरोध किया। प.पू. काकाजी ने इस मंगल प्रसंग पर आशीष प्रदान करते हुए अंतरपूजा का रहस्य समझाया एवं प.भ. दिनकरभाई जैसे भगवदीय संसारी साधु के माध्यम से अपना टेलीफोन प्रभु को लगाकर अपने मन की उलझनों को कैसे हल करा जाये– यह तकनीक समझाकर–नित्य सुबह और रात को दो बारी एकचित्त से भजन करने का नियम दिया....। अब अमेरिका के भिन्न-भिन्न केन्द्रों में सब भक्तों को आनन्द कराकर शिकागो के भक्तों के आग्रह से प.पू. काकाजी 23 अगस्त को रक्षा बन्धन का परम पवित्र उत्सव वहां मनायेंगे।

सभी को हार्दिक जय स्वामिनारायण।

–क्रमशः

.....और श्रीजी महाराज ने कहा—

जिसने श्री कृष्ण भगवान का प्रत्यक्षपन से निश्चय किया हो और उनकी भक्ति एवं दर्शन करता हो, तब भी जो अपने आपको पूर्णकाम न माने और उसे अन्तःकरण में न्यूनता रहा करती हो कि गोलोक, बैकुण्ठ आदि धामों में इन्हीं भगवान का जो तेजोमय रूप है वह जब तक मुझे दिखाई नहीं पड़ा है तब तक मेरा परिपूर्ण कल्याण नहीं हुआ है–ऐसा जिसको अज्ञान हो उसके मुख से भगवान की वार्ता भी नहीं सुननी चाहिये। जो प्रत्यक्ष भगवान में दृढ़ निष्ठा रखते हैं और उनके दर्शन मात्र से ही अपने आप को परिपूर्ण और खूब सौभाग्यशाली मानते हैं एवं दूसरा कुछ नहीं चाहते, उन्हें तो भगवान स्वयं बलात्कार से, अपने धाम में स्थित, अपने ऐश्वर्य और अपनी मूर्तियां दिखाते हैं। इसलिये भगवान में जिसकी अनन्य निष्ठा हो, उसे प्रत्यक्ष भगवान के सिवा अन्य कोई इच्छा नहीं करनी चाहिये।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-9
सोमवार, 28 नवं. 1819

'वासना का क्या रूप है?' इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए श्रीजी महाराज बोले कि–

जो-जो विषय पहले भोगे हों, देखे हों तथा सुने हों उनकी जो अन्तःकरण में इच्छा बनी रहे उसको वासना कहते हैं; और जिन विषयों को कभी भोगे भी न हों उनकी भी जो अन्तः करण में इच्छा हो उसे भी वासना कहते हैं।

'भगवान का एकांतिक भक्त किसे कहा जाता है?–सद् मुक्तानंदस्वामी के इस प्रश्न पर श्रीजी महाराज ने कहा–

जिसको भगवान के सिवा दूसरी कोई भी वासना न हो और अपने आपको ब्रह्मरूप मानकर भगवान की भक्ति करता हो वह एकांतिक भक्त कहा जाता है।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-11
बुद्धवार, 30 नवं., 1819

–क्रमशः

☆

स्वामी की बातें

31. भगवान और बड़े संत के आश्रय से तो बादल जैसे (भीषण) संकट आने वाले हों वे भी टल जाते हैं, वरन् साधन करते-करते कूट-कूट कर मर जायें तब भी नहीं टलते।

प्र. : 1–114

32. करोड़ों जन्मों के बाद जो कसर नष्ट होने वाली हो वह आज ही नष्ट हो सकती है और जीव ब्रह्मरूप हो सकता है, यदि सच्चे संत मिल जायें और इनके कहने के अनुसार करें तो।

प्र. : 1–119

33. करोड़ कल्प के बाद भी भगवान के धाम की प्राप्ति संभव नहीं है, किन्तु ऐसे सन्त को हाथ जोड़ने मात्र से प्राप्त हो जाता है।

प्र. : 1–121

34. इस लोक में सयाना तो कोई भगवान को भजता नहीं, जो पगला होवे वही भजता है।

प्र. : 1–125

35. बाजरे की रोटी खानी है और भगवान का भजन करना है और कुछ करना नहीं है। रोटी तो भगवान को देनी है–साधु को देनी है, सो देंगे, देगें और देगें।

प्र. : 1–126

●

स्वातंत्र्य दिन निमित्त प्रार्थना अभीप्सा

नायगरा फाल के पास

15-8-'83

स्वातंत्र्यदिन

मानवी का मन ही ऐसा है कि दूसरे का ही–अन्य का ही (दोष) देखना–कमी निकालना उसे जँचता है। वह अन्य की ही क्षतियाँ–दोष दिखायेगा। हमारी यह पुरानी आदत ही है, मानो–दूसरों को सुधार दे, समझा दे और सफेद चद्दर में दाग कहां है वह ढूंढ ले। परन्तु.....अपनी ढेर सी बुराईयाँ, क्षतियाँ हमें दिखाई नहीं पड़तीं। दरअसल तो जानने के वाबजूद भी उन्हें पोसते रहते हैं। स्वतंत्रता में स्वच्छंदता (अपनी मर्यादाओं को ठुकराना) विकसित रहती है। गाफलाई दृढ़ होती जाती है। इसी कारण अभाव, अवगुन, विक्षेप या भेदभाव एवं पक्षापक्षी में पड़ जाते हैं और कभी-कभी तो महापुरुषों में भी मनुष्यभाव व मायिकभाव देखने लग जाते हैं।

तो, अब दूसरों के छिद्रों तनीक भी नहीं देखना, देखने की कल्पना भी नहीं करना। दूसरे यदि हमें इन बातों में डाल भी दें तो बह नहीं जाना। सोचना भी नहीं कि–हाँ, मैं तो ठीक हूँ, कसूर तो दूसरों का ही है। अहं के अधीन होकर ऐसे गल्त ख्यालों में नहीं रहना।

प.पू बापा के दिव्य संबंध की सतत जागरुकता और ख्याल रख कर, अतंर्दृष्टि करके हम प्रार्थना करें जिससे की सूक्ष्म अहंकार और ऊपरी-ऊपरी के स्वरूपलक्षी अनुभव ज्ञान की मान्यता में हम बह न जायें। तब ही जड़ प्रकृति और अस्मिता टल जायेगी और सच्ची 'गुणातीत अस्मिता' प्रगट होगी, जिससे कि संबंध वाले और प्रीति से जुड़े भक्तों में कुछ न कुछ तो अच्छा होगा–वही दिखाई पड़ेगा। वह अच्छाई ही अनुभव में आयेगी और प्रत्यक्ष के संबंध से आनंद भी आयेगा। फलस्वरूप शांति और सुख भी रहेंगे (स्वा. बातें प्र. 4, 140)। महाराज ने सद्. मुक्तानंदस्वामी को और संतवर्य योगीजी महाराज ने जीवनभर यही सिखाया है, जिससे की–बिना कोई प्रयास जीव ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की सेवा में रह पाये, सच्ची स्वतंत्रता भोग सके और स्वामी सेवक भाव से समग्र गुणातीत समाज की सेवा भी कर पाये। यूं वच. प्र. 16 और अं. 11 की 'सीताजी जैसी समझदारी' भी दृढ़ होती जाये और बिना अष्टांगयोग साधे

'अध्यात्मयोगी' बनकर निर्विकल्प समाधि का सुख, शांति और आनंद प्राप्त करें।

तो, सभी महापुरुषों के हृदय से आशीर्वाद है कि–ऐसी 'वासुदेवः सर्वमिति' की भावना या समाज ब्रह्मनियंत्रित माना जाये ऐसी प्रभु की लीला ही दिखाई पड़े इस हेतु आप हमारे नौकारमंत्र का जपयज्ञ-स्मृतियज्ञ करके स्वरूपयोग करोगे तो समदृष्टि प्राप्त हो ही जायेगी। बाद में अंतर्दृष्टि करने पर सद्गुरुकृपा और अनुग्रह से दिव्यदृष्टि पाओगे। जैसे की–पू. कोठारीस्वामी, पू. प्रेमस्वामी. पू. भरत, पू. विठ्ठलभाई, पू. दिनकरभाई, पू. हिंमतस्वामी, पू. ज्योतीबहन, पू. देवीबहन आदि को प.पू. बापा के अनुग्रह से निर्दोषबुद्धि सहज ही दृढ़ हुई, वैसे आप सभी को भी सुलभ हो यही प्रभु को तीव्र अभीप्सा सह प्रार्थना है।

तो, आखरी सूचना–वच. अं. 11 का आखरी पेरेग्राफ की–प्रेम से स्वीकारना। फलस्वरूप, यदि दो भगवदियों से प्रेम से जरूर, जरूर, जरूर रसरूप हो जाओगे तो, खूब आनंद पाओगे। अब गाफल तनीक भी नहीं रहना। स्वच्छंदता न बढ़े ऐसी स्वामीसेवकभाव की गुणातीतभावना की सर्वदेशीयता सर्वत्र व्यापक बनती जाये यही सभी स्वरूपों की–पू. पप्पाजी, पू. हरिप्रसादस्वामिजी, पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. साहेब, पू.बा.,पू. बेन और अन्य महापुरुषों की हृदय से प्रार्थना है। नायगरा के प्रचंड महाधोध के पास पू. दिनकरभाई, पू. बापु, पू. गोविन्दभाई और अन्य सभी की उपस्थिति में योग और ज्ञानयज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर भी प्रभुचरणों में एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूपों पू. प्रमुखस्वामिजी, पू. महंतस्वामिजी, पू. डॉक्टरस्वामिजी और संत मंडल समस्त एवं गुणातीतसमाज के चरणों में भी यही प्रार्थना है।

शुभ भवतु.....मंगलं भवतु.....

आपके ही

दादुकाका के हेतपूर्वक

जय श्री स्वामिनारायण।

15-8-'83

❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	31.8.83	बुधवार	कृष्णजन्माष्टमी, व्रत
2.	दि.	1.9.83	गुरुवार	प.पू.प्र.ब्र.स्व. पप्पाजी का प्राकट्यदिन
3.	दि.	3.9.83	शनिवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	10.9.83	शनिवार	गणेश चतुर्थी
5.	दि.	15.9.83	गुरुवार	नौमी, श्री हरिजयंती
6.	दि.	17.9.83	शनिवार	जलझीलनी एकादशी, व्रत
7.	दि.	18.9.83	रविवार	वामन जयंती
8.	दि.	26.9.83	सोमवार	धर्मपिता एवं ब्र. स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध
9.	दि.	30.9.83	शुक्रवार	भक्तिमाता का श्राद्ध

PUBLISED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A-103, Ashokvihar-III, Delhi110052, India. Tel.: 7128838
Prined at R.P. printers, Shahadara, Delhi-110 032